उल्टे दांव वाले कॉन्ट्रा फंडों ने किया बाजार से बेहतर प्रदर्शन

टाटा कॉन्ट्रा फंड ने पिछले 12 महीने में दिया 34 फीसदी का जोरदार रिटर्न

शैलेश मेनन
मुंबई

बाजार की चाल से उलट चलने वाले फंड मैनेजरों का प्रदर्शन अच्छा-खासा रहा है। कोई कॉन्ट्रेरियन फंड मैनेजर शानदार प्रदर्शन का दावा नहीं कर सकता। लेकिन यह जरूर है कि इनमें से ज्यादातर ने निवेशकों को बाजार से बेहतर रिटर्न दिया है। आठ में से छह कॉन्ट्रा फंडों ने निवेशकों को बढ़िया रिटर्न दिया है। कॉन्ट्रा फंड में जमा पैसा उन शेयरों पर लगता है जो बाजार की नजर से दूर होते हैं या जिन्हें निवेशकों की नजर में आने का इंतजार होता है। किसी शेयर में संस्थागत निवेशक तब दिलचस्पी लेते हैं जब उसकी कीमत में बढ़ोतरी होने लगती है। सैद्धांतिक तौर पर कॉन्ट्रा इनवेस्टमेंट वैल्यू इनवेस्टमेंट का उल्टा होता है।

टाटा म्युचुअल फंड के इक्विटी ऑफशोर फंड्स हेड भूपिंदर सेठी कहते हैं, 'हम बेकार कंपनी में निवेश नहीं करते। हम बुनियादी तौर पर मजबूत उन कंपनियों में निवेश करते हैं जो निवेशकों की नजरों में नहीं चढ़े होते हैं। हम उन शेयरों में निवेश करते हैं, जिनमें नकारात्मक खबरों के चलते कुछ समय के लिए मंदी का रुझान बना होता है। हमें इस बात का पूरा भरोसा होता है कि इन कंपनियों का कारोबार मध्यम से लंबी अवधि में बेहतर रह सकता है।' आईएनजी कॉन्ट्रा फंड (14 करोड़ रुपए) और जेएम कॉन्ट्रा फंड (235 करोड़ रुपए) को छोड़ दें तो बाकी सभी कॉन्ट्रा फंडों ने प्रमुख सूचकांकों से बेहतर प्रदर्शन किया है। मैग्नम कॉन्ट्रा फंड (3,624 करोड़) की वैल्यू एक साल में 21 फीसदी से ज्यादा बढ़ी है। टाटा कॉन्ट्रा फंड (125 करोड़) और कोटक कॉन्ट्रा फंड (89 करोड़) ने इस दौरान क्रमशः 34 और 33 फीसदी का रिटर्न दिया है। रेलिगेयर कॉन्ट्रा फंड (लोटस एमएफ छोड़कर) का रिटर्न पिछले एक साल में 28 फीसदी रहा है।

कॉन्ट्रा फंड मैनेजरों का दावा होता है कि वो अच्छे या कई गुना रिटर्न देने वाले शेयरों की पहचान दूसरों से पहले कर लेते हैं और उनमें सस्ती दरों पर निवेश करते हैं। उनके हिसाब से जिस वक्त बाजार का रुख बहुत ज्यादा नकारात्मक हो गया हो और वह जोखिम उठाने में गैरजरूरी अनिच्छा दिखा रहा हो, वह वक्त कॉन्ट्रा पोर्टफोलियो बनाने के लिए सही होता है। व्यावहारिक तौर पर फंड मैनेजर नए सेक्टर या शेयरों में निवेश नहीं करते। वो परंपरागत रूप से जांचे-परखे पसंदीदा शेयरों और सेक्टर पर दांव लगाते हैं। उनका कॉन्ट्रा पिक या सेक्टर कॉल काफी कम होता है और कभीकभार तो एकदम मामूली कॉन्ट्रा निवेश होता है।

कॉन्ट्रा फंड दूसरे इक्विटी फंडों की तरह अपने पोर्टफोलियो में एनर्जी या पावर सेक्टर की कंपनियों के शेयरों को शामिल करते हैं। मैग्नम कॉन्ट्रा, कोटक कॉन्ट्रा और यूटीआई कॉन्ट्रा ने अपने फंड का क्रमशः 26, 22 और 19 फीसदी निवेश पावर सेक्टर में किया हुआ है। कॉन्ट्रा फंड मैनेजरों के पसंदीदा सेक्टर की सूची में फाइनेंस कंपनियां दूसरे पायदान पर होती हैं। कुछ कॉन्ट्रा फंडों ने अपने कुल कोष का 14 से 16 फीसदी तक का निवेश फाइनेंस कंपनियों में किया हुआ है। वैल्यू इनवेस्टर की तरह टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और एफएमसीजी शेयरों में भी निवेश करते हैं। गौरतलब है कि पिछले एक साल में बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 17 फीसदी चढ़ा है। इस दौरान फंडों के वर्ग के तौर पर इक्विटी डायवर्सिफाइड फंड्स के रिटर्न में 29 फीसदी का इजाफा हुआ है।

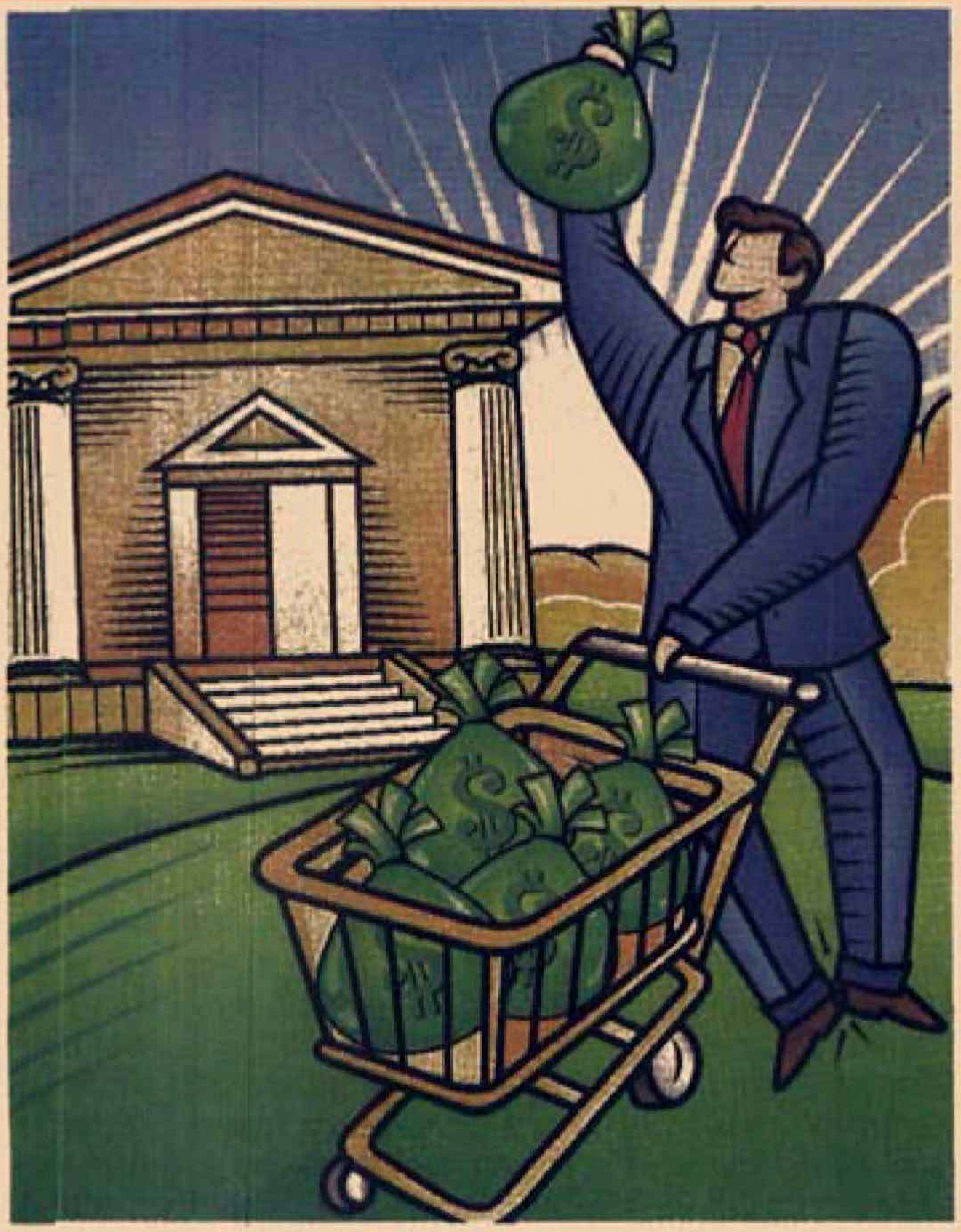

सही मौके पर नजर

- **कॉन्ट्रा फंड** में जमा पैसा उन शेयरों पर लगता है जो बाजार की नजर से दूर होते हैं या जिन्हें निवेशकों की नजर में आने का इंतजार होता है
- **कॉन्ट्रा फंड** मैनेजरों का दावा होता है कि वो अच्छे या कई गुना रिटर्न देने वाले शेयरों की पहचान दूसरों से पहले कर लेते हैं और सस्ती दरों पर खरीदते हैं
- **जब बाजार** का रुख बहुत ज्यादा नकारात्मक होता है और वह जोखिम उठाने में गैरजरूरी अनिच्छा दिखाता है, कॉन्ट्रा पोर्टफोलियो बनाने सही वक्त होता है